(4) ब्रह्मपुत्र का मैदान

इसे भी कहा जाता है

असम की घाटी, असम का मैदान, ब्रह्मपुत्र घाटी।

इस मैदान का निर्माण ब्रह्मपुत्र और उसके सहायक नदियों के द्वारा, तिब्बत के पठार तथा हिमालय से लायी गयी जलोढ़ से हुआ है।

इस मैदान के - उत्तर में - पूर्वी हिमालय - तथा हिमाचल प्रदेश

दक्षिण में - गारो, खासी, जयन्तीया पहाड़ियाँ

पूर्व - पटकाई बुम तथा नागा बुम

पश्चिम - निम्न गंगा का मैदान

⇒ इस मैदान की लम्बाई - पूर्वी असम से धुबरी तक - 780 K.m

- चौड़ाई - 60 - 100 K.m

- क्षेत्रफल - 56000 वर्ग K.m

⇒ इस मैदानी भाग में ब्रह्मपुत्र नदी नामचाबरुआ

L = पूर्वी असम - धुबरी तक 780 K.m

b - 60-100 K.m

Area - 56000 sq K.m

(N.E - S.W)

Dim - 1200 K.m

रचना - जलोढ़ मिट्टी, ओरछुर, मौली, नदी द्वीप

A.P. - दिहांग

हिमालय को काटकर "सादिया" नामक स्थान में प्रवेश करती है और 'धुबरी' के पास बांग्लादेश में प्रवेश कर जाती है।

⇒ फरक्का बांध से बांग्लादेश की ओर जाने वाली गंगा की धारा 'पद्मा' कहलाती है। बांग्लादेश में पद्मा तथा ब्रह्मपुत्र की संयुक्त धारा – मेघना कहलाती है।

⇒ इन मैदान की ढाल – उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर 12 c.m/K.m.

⇒ इस मैदानी भाग की मुख्य रचना - जलोढ़ पंख, गोखुर झील और नदी द्वीप (माजुली)

माजुली – यह ब्रह्मपुत्र नदी के द्वारा निर्मित विश्व का सबसे बड़ा नदी द्वीप

- इसका क्षे० – 51000 वर्ग K.m.
- ब्रह्मपुत्र नदी तिब्बत के पठार पर बहुत लम्बी दूरी तय करती है फलतः इसमें सर्वाधिक जलोढ़ की मात्रा होती है। जब ब्रह्मपुत्र पर्वत से उतरकर असम के मैदान में प्रवेश करती है तो इसकी गति बहुत अधिक घट जाती है। फलतः यह जलोढ़ का निक्षेपण करने लगती है। इससे नदी मार्ग में टापू के समान रचना बन जाती है यही कहलाता है नदी द्वीप।

Area 51000 वर्ग K.m.
विश्व का सबसे बड़ा नदी द्वीप
एक सिंगी गेंडा के लिए प्रसिद्ध

⇒ विश्व में सर्वाधिक नदी द्वीप का निर्माण - ब्रह्मपुत्र के द्वारा। माजुली द्वीप निम्न लिखित कारणों से चर्चा में -

(A) विश्व का सबसे बड़ा नदी द्वीप
(B) 'एक सिंगी गेंडा' का यह विश्व का सबसे बड़ा प्राकृतिक आश्रयस्थल है।
(C) यहाँ असम की उग्रवादी संस्था 'उल्फा' का केन्द्र है।
(D) यहीं प्रसिद्ध पर्यावरणविद् 'संजय घोष' की हत्या की गई थी।

(D) आब ब्रह्मपुत्र नदी के द्वारा यह नदी द्वीप का लगातार अपरदन हो रहा है। और एक दिन ही इसका अस्तित्व खतरे में है। अतः यह चर्चा में है।

पठार

प्रायद्वीपीय पठार :⇒ प्रायद्वीपीय पठार निर्मित है 'गोंडवाना लैंड' से

प्रायद्वीपीय पठार का आकार – त्रिभुजाकार, जिसका शीर्ष – (कन्याकुमारी) हिन्द महासागर की ओर आधार – उत्तरी मैदान की ओर।

अतः प्रायद्वीपीय पठार उत्तर की ओर चौड़ा तथा दक्षिण की ओर क्रमशः संकीर्ण है।

* यह भारत का सबसे पुराना पठार है।

यह पठारी भाग तीन ओर से पहाड़ियों से घिरा है –

(A) उत्तर में – अरावली, विन्ध्याचल, सतपुड़ा बाड़मेर और राजमहल की पहाड़ी

(B) पश्चिम में – पश्चिमी घाट या सह्याद्रि

(C) पूर्व में – पूर्वी घाट

"इस पठारी भाग की उत्तर से दक्षिण की ओर लम्बाई – '1600 k.m'

"पूर्व से पश्चिम की ओर चौ० – '1400 k.m'

* प्रायद्वीपीय पठार का क्षे० – '16 लाख वर्ग k.m'

* (भारत का सबसे बड़ा प्राकृतिक विभाग)

⇒ विन्ध्याचल इसे दो भागों में बाँटता है –

(1) उत्तर की ओर 'मालवा का पठार'

* निर्मित – गोंडवाना लैंड से
* आकार – त्रिभुजाकार
* भारत का सबसे पुराना पठार
* लम्बाई – 1600 k.m (N-S)
* चौड़ाई – 1400 km (E-W)
* क्षेत्रफल – 16 लाख km²
* भारत का सबसे बड़ा प्राकृतिक विभाग
* उत्तरी भाग – मालवा का पठार
* दक्षिणी भाग – दक्कन का पठार
* बंटा है – विन्ध्याचल द्वारा

(ii) दक्षिण की ओर 'दक्कन का पठार' -

⇒ प्रायद्वीपीय पठार पर उत्तर से दक्षिण की ओर पहाड़ियाँ और पठारों का क्रम है — उदाहरण
(अरावली श्रेणी → मालवा पठार → विंध्याचल → सतपुड़ा → अजन्ता श्रेणी)

⇒ विन्ध्याचल श्रेणी इस पठारी भाग को दो भागों में बाँटती है
- ① उत्तरी उच्च भूमि - (मालवा का पठार) ② दक्कन का पठार

⇒ ① उत्तर उच्च भूमि के अन्दर कुल चार पठार आते हैं -

(A) मारवाड़ का पठार → यह पठार राजस्थान में अवस्थित, यहाँ कहलाता है 'पूर्वी राजस्थान का पठार'।
इस पठार का निर्माण 'बालुपत्थर + चूनापत्थर + शैल' है विन्ध्यन काल में हुआ।
* इस पठार की सामान्य ढाल 'पश्चिम से पूर्व की ओर'।
* यहाँ की मुख्य नदी - बनास (अरावली श्रेणी से निकलकर 600 km पूर्व चलकर चम्बल से मिलती है)

* पूर्वी राजस्थान का पठार
* विन्ध्यन काल में
* चूनापत्थर + बालुपत्थर + शैल से
* नदी - बनास (चम्बल की सहायक)
* ढाल → प० → पू

(B) मध्य पठार → मारवाड़ के पठार से पूर्व।
इसका अधिकांश भाग चम्बल की घाटी में चला है।
यहाँ चम्बल का प्रवाह भ्रंश घाटी में होता है।

(C) बुन्देलखंड का पठार → यह यमुना के दक्षिण, विन्ध्याचल और मध्य पठार के बीच अवस्थित है।
⇒ बुन्देलखंड का पठार भी कहलाता है — यमुना पार का मैदान
⇒ इस पठार की मुख्य चट्टान - 'ग्रेनाइट + नीस'
ढाल - यमुना की ओर

* अवस्था - विन्ध्याचल और मध्य पठार
* निर्माण → ग्रेनाइट + नीस से
* यमुना पार का मैदान

(D) मालवा का पठार → यह पठारी भाग उत्तर की उच्च भूमि तक सबसे बड़ा भाग है जो अरावली के दक्षिण।
* मालवा का पठार लावा से निर्मित (बेसाल्ट चट्टान है) काली कपासी मिट्टी के कारण यहाँ कपास की खेती होती है।

* निर्माण - लावा से (बेसाल्ट चट्टान)
* स्थिति - विन्ध्य के उत्तर
* नदी - चम्बल

* मालवा के पठार पर भी विन्ध्याचल श्रेणी है जो हिमालय से पुराना है और चित्तौड़ से सासाराम तक विस्तृत है।
* मालवा के पठार पर बहने वाली मुख्य नदी - चंबल, इसकी सहायक - बेतवा, केन, पार्वती, काली सिन्ध,

(E) बघेलखंड का पठार - यह मैकाल श्रेणी के पूर्व में।

* इसका पूर्वी भाग 'ग्रेनाइट-चट्टानें' से, जबकि पश्चिमी भाग चूना पत्थर तथा बलुआ पत्थर।
* बघेलखंड के पठार पर दो नदियाँ बहती हैं -
  (A) उत्तर की ओर - सोन नदी
  (B) दक्षिण की ओर - महानदी

(F) छोटानागपुर का पठार :- यह बघेलखंड के पूर्व में मूलतः झारखंड में अवस्थित है।

* छोटानागपुर का पठार (खनिजों की बहुलता के कारण कारण) कहलाता है - भारतीय खनिजों का भंडारघर"
* इस पठार के उत्तर पश्चिमी भाग में सोन नदी बहती है जो रामनगर के पास गंगा में मिलती है।
* छोटानागपुर के पठार का निर्माण मुख्यतः गोंडवाना समूह की चट्टानें और अंशतः आर्कियन और धारवाड़ से हुआ है।
* छोटानागपुर के पठार पर अधिकतम ऊँचाई का क्षेत्र - पारसनाथ (पाटमहेश) - 1100 m.
* यह पाट प्रदेश 'अल्युमिनियम' के अयस्क 'बॉक्साइट' का केन्द्र है।
  जैसे - बगरूपाट, खुलीपाट, हडनीपाट आदि
* पाट प्रदेश की नदी का प्रवाह - अरीय प्रवाह प्रणाली (Radial drainage system) के द्वारा होता है।
  दामोदर, स्वर्णरेखा, कोयल (उ/द), बराकर
  यहाँ अरीय प्रवाह प्रणाली के द्वारा बेसिन का विकास किया है।

पूर्वी - ग्रेनाइट से
पश्चिमी भाग - चूना पत्थर + बलुआ पत्थर
गोंडवाना समूह की चट्टान
* अधिकतम ऊँचाई - पारसनाथ
* अरीय प्रवाह प्रणाली
दामोदर, स्वर्णरेखा, कोयल, बराकर
* मुख्य नदी - दामोदर
पठार को दो भागों में विभाजित
N. Part - हजारीबाग का पठार
S. Part - राँची का पठार
नदी द्वारा प्रदेश विभाजित है